11 ISSN 2455-5169
peer-reviewed

परिवर्तन

परिवर्तन

साहित्य, संस्कृति एवं सिनेमा की वैचारिकी

(त्रैमासिक ई-पत्रिका)

सिनेमा विशेषांक

21वीं सदी का भारतीय सिनेमा

सम्पादक
महेश सिंह

आवरण सज्जा : अनूप कुमार

Scanned by TapScanner

अनुक्रमणिका

संपादकीय

इक्कीसवीं सदी का भारतीय सिनेमा	महेश सिंह	1

आलेख / शोध-पत्र

नवउदारवादी विकास केंद्रित हिंदुत्ववादी राजनीति का विकल्प है 'काला'	डॉ. प्रमोद मीणा	9
मलयालम सिनेमा - अन्तर्राष्ट्रीय नक्शे पर	डॉ. टी. शशिधरन	22
इक्कीसवीं सदी में मलयालम सिनेमा	मैमूना पी.	28
मानवता की राजनीति 'सुदानी फ्रम् नैजीरिया' में	मन्जु वेलापुधन	31
इक्कीसवीं सदी के पूर्व और उत्तर में ओड़िया और हिंदी सिनेमा का विकासात्मक अध्ययन	डॉ. ममता खाण्डल	35
छत्तीसगढ़ी सिनेमा : चुनौतियां और संभावनाएं	डॉ. गुरु सरन लाल	41
हिंदी फिल्मों का स्त्रीपाठ: भाषिक आयाम	डॉ. पद्मप्रिया	45
इक्कीसवीं सदी के स्त्री केन्द्रित हिन्दी सिनेमा, समाज और नारी	डॉ. रेखा कुर्रे	50
ग्लोबलाइजेशन और सिनेमा : भाषिक घालमेल के बीच संप्रेषणीयता	प्रियंका शुक्ला	64
संबंधों का मिथक तोड़ती फिल्मों पर एक अध्ययन (पिंक, अनारकली ऑफ आरा, लिपिस्टिक अंडर माइ बुर्खा , वीरे दी वेडिंग, और लस्ट स्टोरीज के विशेष संदर्भ में)	हरिनाथ कुमार	68
जोधपुर में राज़ी	रामबक्ष जाट	78
कविता पर्दे पर भी लिखी जा सकती है।	नवरत्न पांडे	81
हिन्दी सिनेमा में महिलाओं के बदलते तेवर	डॉ. कुसुम संतोष विश्वकर्मा	87
फिल्मी पर्दा करे बेपर्दा	नीरू मोहन 'वागीश्वरी'	92
हिंदी सिनेमा में पारिवारिक फ़िल्में	आशुतोष श्रीवास्तव	95
सिनेमा के बदलते परिदृश्य और नारी	संजय कुमार सिंह	102
साहित्यिक कृतियों पर आधारित इक्कीसवीं सदी का हिन्दी सिनेमा	प्रियंका	107
इक्कीसवीं सदी का पंजाबी सिनेमा : समीक्षात्मक आकलन एवं आर्थिक सर्वेक्षण	तेजस पूनिया	112
इक्कीसवीं सदी का मराठी सिनेमा	जगदाले अप्पासाहेब गोरक्ष	117

साक्षात्कार

फिल्म समीक्षक दीपक दुआ के साथ तेजस पूनिया की बातचीत		126
फिल्म समीक्षक पुनीत बिसारिया से संपादक महेश सिंह की बातचीत		129
सांस्कृतिक कला 'जात्रा' के कलाकार आशीष चक्रवर्ती से डॉ. जयराम कुमार पासवान की बातचीत		139

Scanned by TapScanner

इक्कीसवीं सदी का मराठी सिनेमा

जगदाले अप्पासाहेब गोरक्ष
शोधार्थी,
हिन्दी एवं भारतीय भाषा विभाग,
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
धर्मशाला -176215

भारतीय सिनेमा के इतिहास में मराठी सिनेमा का विशेष योगदान रहा है। इक्कीसवीं सदी के मराठी सिनेमा ने समाज के हर वर्ग के यथार्थ को पर्दे पर बड़ी संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है। सिनेमा के सौ वर्ष पूर्ण होने के बाद आज इक्कीसवीं सदी के मराठी कलाकारों ने मराठी सिनेमा को विश्व स्तर पर एक नई पहचान दिलायी है। इस पूँजीवादी दौर में सिनेमा अपने मूलभूत मार्ग से हटकर अपने उद्देश्य मानव कल्याण से संबंधित न हो करके व्यावसाय पर पूर्णतः आधरित हो चुका है। समकालीन मराठी सिनेमा ने समाज के लिए एक आदर्श प्रतिमान स्थापित किया है। मराठी फिल्में सिर्फ महाराष्ट्र ही नहीं पूरे भारत के सामाजिक परिवेश व उसकी समस्याओं को पर्दे पर साकार किया एवं लोगों को इसके प्रति सजग तथा जागरूक बनाया है। 21वीं सदी की मराठी फिल्मों में 'बालक-पालक', 'टाइम पास', '35 टक्के वर पास', 'ख्वाड़ा', 'किल्ला', 'जाणीवा', 'सैराट', 'रिंगण', 'मी येतोय', 'गावठी', 'चुंबक' आदि ऐसी ही मराठी फिल्में हैं जो मराठी परिवेश के माध्यम से पूरे भारत की कहानी बयान करती है। वह समाज के आम-आदमी की कहानी को बड़ी सादगी के साथ व्यक्त करती है। इन मराठी फिल्मों का नायक भी समाज के मध्य या बीच से आता है, जिसका सिनेमा जगत से दूर-दूर तक कोई वास्ता नहीं। किसी दूर-दराज के ग्रामीण अंचल से आने वाले इन फिल्मों के पात्र अपने समाज के यथार्थ को बड़ी संजीदगी के साथ व्यक्त करते हैं। यह मराठी सिनेमा की बड़ी उपलब्धि है। इससे पहले मराठी सिनेमा का दायरा कुछ सीमित लोगों तक ही था। मराठी सिनेमा में कई अभिनेता, निर्देशक मराठी भाषी न होकर भी मराठी भाषा में फिल्म प्रदर्शित कर रहें हैं जो अच्छी एवं सुपरहिट साबित हुई हैं, जिसकी संख्या दिनोंदिन बढ़ ही रही है। 2017-18 के दशक में हिन्दी के कई दिग्गज कलाकार भी मराठी सिनेमा में अपना भाग्य आजमा रहे हैं। जिससे मराठी सिनेमा के स्तर का अनुमान लगाया जा सकता है।

'बालक-पालक' (4 जनवरी 2013) फिल्म की कथावस्तु 'सेक्स' विषय पर आधारित है। इस फिल्म के निर्देशक रवि जाधव हैं। फिल्म में प्रथमेश तथा भाग्यश्री, डॉली गावस्कर तथा भाग्य श्रेगे इन चार बच्चों का समूह है। भारतीय संस्कृति में दिवाली का त्यौहार बहुत ही धूमधाम एवं खुशी के साथ मनाया जाता है। बच्चे

Scanned by TapScanner

छुट्टी में मस्ती करने के लिए कोई न कोई खेल का आयोजन करते हैं। उस दौरान इन बच्चों को पता चल जाता है कि 'ज्योति ताई' घर छोड़कर जा रही हैं लेकिन वे क्यों जा रही है उसका कारण कोई नहीं बताता है। बस ज्योति ताई ने 'शेण खाल लिया है, (गौबर खा लिया है) सब यही कहते हैं। इसका जवाब 'आव्या' नामक लड़का बहुत ही किताबों में ढूंढता है मगर उत्तर नहीं मिल पाता। वे सभी बच्चे उस वाक्य का अर्थ जानना चाहते हैं ताकि पत्ता चल सकें कि ज्योति ताई घर छोड़कर क्यू जा रही है ? बच्चे आपस में तय करते हैं कि हम सबने बचपन में मिट्टी, चोख खाया मगर 'शेण खाल' या 'गौबर खाना' ये क्या खाना है? यह बच्चों को समझ नहीं आता है इसलिए वे घर में अपने माँ-बाप से पूछते हैं लेकिन उन्हें घर में इसका अर्थ बताने के बजाय चुप ही कराया जाता है और उन्हें मार तक पड़ती है।

समाज में शिक्षा के कारण ही ज्ञान-विज्ञान को बढ़ावा मिलता है। पहले की अपेक्षा आज की पीढ़ी के शिक्षा-स्तर में कुछ हद तक बदलाव हुआ है। अपने यहाँ 'सेक्स' विषय पर खुले तौर से चर्चा नहीं होती है चाहे वह घर में हो या समाज में, हर जगह लोग इस पर बात करने में हिचकिचाहट महसूस करते हैं। 'सेक्स' विषय को सामाजिक तौर पर इतना दबाया जाता है कि उस पर खुलेआम कोई बात नहीं करता है। ऐसे में बड़ा प्रश्न उठता है कि इन 10-12 साल के बच्चों के मन की व्यथा का निवारण कैसे किया जाए? 'विशु' नामक लड़के का स्वभाव टपोरी-सा है। वह उन बच्चों को दोस्त बनाता है जिन्हें 'सेक्स' के बारे में जानकारी चाहिए होती है। इसलिए वो उन सबको सेक्स की जानकारी वाली किताबें पढ़ने को देता है। मगर उन बच्चों के लिए इससे भी कोई सार्थक हल नहीं निकल पाता। अतः विशु ही उन लोगों के लिए इन सभी प्रश्नों के हल का एक मात्र साधन है। अंततः बहुत प्रयत्न करने पर उन्हें स्त्री-पुरुष संबंध के बारे में पता चलता है, तब जाकर उन्हें ज्योति ताई ने 'शेण खाल' (गोबर खा लिया) का अर्थ समझ में आता है, जिसका मतलब शादी से पहले लड़की का गर्भवती होना है। विशु के प्रस्तुत कथन "ढिचांग-ढिचांग ढिचांग"[1] से ही उन बच्चों को छुपे हुए सवालों का हल एवं 'शेण खाल' का अर्थ मिलता है। भाग्या नामक लड़के की उम्र नेहा बहन (ताई) के उम्र से दस-बारह साल छोटी है मगर उसकी ओर देखकर आकर्षण का भाव उभरता है। आव्या का मानना है कि यार... चिऊ भी तो एक लड़की है। प्रायः सेक्स के लिए स्त्री की उम्र, रिश्ता न देखकर हम कामवासना के अधीन होकर ही आकर्षण की ओर बढ़ते हैं।

भारतीय सिनेमा में 'सेक्स एजुकेशन' को लेकर मेरी दृष्टि में ऐसी दूसरी फिल्म देखने को नहीं मिली है। इसमें सभी बच्चे उम्र के उस नाजुक मोड़ पर हैं, जिनसे कुछ गलत हो सकता था मगर ऐसा नहीं होता है। 'बालक- पालक' सिनेमा पूरी तरह से सेक्स के इर्द-गिर्द होकर भी उसमें कोई अश्लीलता का दृश्य कहीं नजर नहीं आता है। यह मराठी सिनेमा की बड़ी उपलब्धि है। आज 'सेक्स एजुकेशन' की कमी अथवा गलत ज्ञान के कारण समाज में बच्चों का बड़ा वर्ग सेक्स की ओर आकर्षित होकर रेप जैसा घिनौना कृत्य कर बैठते हैं। सेक्स एजुकेशन देश में एक बड़ा मुद्दा है, जिस पर आज गंभीरता से सोचने की आवश्यकता है! जिसकी तरफ चर्चित मराठी फिल्म 'बालक-पालक' संकेत करती है।

Scanned by TapScanner

'टाइम पास' (21 दिसंबर 2013) के निर्देशक रवि जाधव तथा अभिनेता-अभिनेत्री प्रथ
केतकी माटेगांवकर इसकी मूल भूमिका में हैं। इसका विषय दगडू एवं प्राजक्ता की प्रेम कहानी है। प्र
इस फिल्म में दो भूमिका में हमारे सामने आती है, एक फिल्म में स्वतः ही संगीत गायन करती है। दूस
नायिका की भूमिका में है। ये दोनों किरदार अपने कम उम्र में ही बहुत बड़ा अभिनय को साकार क
सिनेमा में दगडू नामक पात्र खुद एक 'टाइम पास' है, जिसकी प्रेमकहानी का अन्त भी 'टाइम पास'
रही जाती है। वह अपने जीवन में किसी कार्य को छोटा-बड़ा नहीं मानता है। उसके चहरे पर हर समय
और आनंद का भाव छलकता रहता है। इसके साथ ही दगडू ने प्रेम को नए-नए रुप में अभिव्यक्त क
भी प्रयास किया है। इसमें दगडू एवं प्रजक्ता की प्रेम कहानी 'टाइम पास' बनकर ही रह जाती है
उसमें अभिनय का प्रदर्शन बहुत ही गंभीर है। इसलिए यह फिल्म किसी को भले ही 'टाइम पास' ल
उसमें जीवन का एक अहम पहलू हमारे सामने आता है। दगडू के डायलॉग ने दर्शकों का खूब म
किया। उसके शब्दों में -"हम गरीब हुए तो क्या हुआ दिल के अमीर है ....काले हुए तो क्या हुआ हम
चाहनेवाले हैं।", "चलो पढ़ो लिखों पैसा कमाओं और मर जाव!... हम जियंगे भी अपनी मर्जी से.... और
मरेंगे भी अपनी मर्जी से चल-चल हवा आने दे।"[२] ये डायलॉग मराठी में बहुत ही लोकप्रिय हुए। उस
के आधार पर ही हिन्दी के 'कपिल शर्मा कमेडी नाइट शॉ' की तरह मराठी में 'चला हवा येऊ द्या' न
कॉमेडी शॉ चालू हुआ।

'ख्वाड़ा' (2015) के निर्देशक शशांक शेण्डे की फिल्म है। इस फिल्म के प्रमुख पात्र की भूमि
भाऊ शिंदे, सुरेखा, योगेश दामले, हेमंत कदम हैं। इस फिल्म की कथावस्तु भेढ़ चरानेवाले गढ़रीया
के जीवन संघर्ष को देखकर सोचने पर मजबूर करती है। गढ़रीया का कोई गाँव नहीं है, इसलिए उ
चराने के लिए हर दिन एक नए गांव में जाना पड़ता है। एक गांव का मुखिया (पाटील) हर हफ्ते गढ़
एक भेड़ को मारकर खा जाता है। ऐसा करते हुए पाटील ने गढ़रीया परिवार के चार-पांच भेड़ ख
लेकिन उसके बदले में किसी तरह की कोई राशि नहीं दी। इससे त्रस्त होकर गड़रिये का लड़का
खिलाफ आवाज उठाता है तो उसी गाँव का पाटिल तथा उसके साथीदार मिलकर गढ़रीया परिवार क
के बाहर करवाकर उन पर जुल्म करने लगते हैं। इसके पहले 80-90 के दशक की फिल्मों की कथ
नायक-नायिका के शादी के लिए तथा साहूकारी, लगान व दहेजप्रथा का विरोध देखने को मिलता था।
आज के मराठी फिल्म का नायक अपने स्वयं पर हुए अन्याय के विरुद्ध न्याय की मांग करता
इक्कीसवीं सदी का ही परिमाण है। इस फिल्म को ग्रामीण परिवेश में फिल्माया गया है। सभी लोग र
के लिए शहरों में जाते हैं लेकिन इस फिल्म की कथावस्तु ने फिर से उन्हें गाँव की ओर आकर्षित वि
भारत की आत्मा ही उसके ग्रामीण क्षेत्रों में बसती है क्योंकि कहीं आने-जाने पर अक्सर हमसे पूछ
जाता है कि आप कौन-से गाँव से हैं? इससे पहले फिल्मों में गढ़रीया परिवारों के जीवन के कुछ ही द
देखने को मिलते थे किन्तु 'ख्वाड़ा' फिल्म के माध्यम से उसके पूरे समग्र जीवन का चित्र एवं संघर्ष के
की एक-एक घटना को गहराई के साथ व्यक्त किया गया है।

Scanned by TapScanner

'किल्ला' फिल्म (2015) का निर्माण, निर्देशक अविनाश अरुण ने किया है। 'किल्ला' पहले
का दरबार होता था, जो आज समाज को उनके जीवन से रूबरू कराता है। यह फिल्म ऐतिहासिक
स्थल के महत्त्व, गुरु-शिष्य परंपरा का आधुनिक सन्दर्भ व शिक्षिका की भूमिका में एक स्त्री की
उसके संघर्ष को ध्यान में रखकर फिल्माया गया है। फिल्म में स्कूली बच्चों को उनकी शिक्षिकाएँ 'कि
किल्ला' के इतिहास से परिचय कराने के उद्देश्य से लाती हैं और किल्ले के इतिहास से रूबरू करव
यह फिल्म की परिपाटी से एक अलग फिक्शन को हमारे सामने रखती है और कैमरे का इमोशन ही
से अधिक संवाद करती हैं। बच्चों का अपनी भूमिका में गहरे उतरकर अभिनय करना आपने आप
अनूठी कला है। किल्ले के भीतर का अंधेरा और बाहर की घास पर सूर्य का पीला प्रकाश व बारिश व
मन को और मुग्ध करता है। किल्ले के इतिहास के साथ फिल्म में विद्यालय के अंतर्गत शिक्षक और
संबंधों की पड़ताल भी देखने को मिलती है। प्राथमिक विद्यालय का माहौल जहाँ टीचर न होने पर बच
शोरगुल का वातावरण, फिल्म को अधिक सजीव करता है। अमृता नामक शिक्षिका स्कूली बच्चों व
शिक्षिका न होकर उसके साथ दोस्त व माँ की भूमिका में नजर आती हैं। आज के परिवेश में स्कूल
स्थिति कम देखने मिलती है। इस सन्दर्भ में मेरा मानना है कि गुरु-शिष्य की जो परंपरा प्राचीन समय
आ रही है, वह आज के वर्तमान युग में कहीं न कहीं लुप्त हो उठी है। 'किल्ला' फिल्म में अमृता के
शादी के दो वर्ष पश्चात् ही मृत्यु हो जाती है। उस समय अमृता की उम्र 22-23 वर्ष के लगभग रहती
की मृत्यु के बाद इतनी कम उम्र में ही सारी जिम्मेदारियों का बोझ उसके सर पर आ जाता है। अपने
पालन-पोषण व तमाम जिम्मेदारियों का निर्वाह करते हुए अमृता को कड़ा जीवन संघर्ष करना पड़
अपने बच्चे के लिए अमृता इच्छा के बावजूद दूसरी शादी नहीं करती है। निष्कर्ष के रूप में 'किल्ला'
में मनुष्यता के रिश्तों की गहरी पड़ताल के साथ 'विजय दुर्ग किल्ला' की ऐतिहासिकता तथा मराठी स
स्त्री-जीवन के त्याग व संघर्ष को बड़े साफगोई के साथ व्यक्त करता है। 'विजय दुर्ग किल्ला' का द
(गोमुख) कोई तोड़ नहीं सकता था। वह चाहे मनुष्य हो या हाथी ही क्यों न हो क्योंकि उस दरवा
आकार ही तलवार के समान है। किल्ले के प्रति स्कूली बच्चों की अभिरूची होकर ऐसे कई तथ्य पि
माध्यम से हमारे सामने आते हैं।

भारत में स्त्री की वास्तविक स्थिति को बयां करती चर्चित मराठी फिल्म 'जाणीवा' (201
निर्देशन राजेश रणशिंगर ने किया है। फिल्म में मुख्य भूमिका में सत्या मांजरेकर, वैभवी शंदिल्या,
दानी, अनुराधा मुखर्जी, संकेत अग्रवाल आदि हैं जो लगभग 14-15 साल के पात्र हैं। इसमें स्त्री के
की कहानी दर्शाती है। उस महिला का बलात्कार होता है, उसको न्याय देने के लिए समीर नामक
दायित्व उठाता है और कहता है पहले तिलक युग था अब तिल युग आया है। उसका रक्त या ब्लड
इसलिए वर्तमान पीढी ज्यादा टाइम न लगाते हुए अन्याय के विरुद्ध जल्दी न्याय देनेवाली व्यवस्था च
और वह व्यवस्था को बदलने के लिए सबको प्रेरित करता है।

Scanned by TapScanner

किसान समस्या को ध्यान में रखकर निर्देशक मकरंद माने ने 'रिंगण' नामक मराठी फिल्म का किया। 'रिंगण' फिल्म को 63वां नैशनल अवार्ड महोत्सव में बेस्ट मराठी फिल्म अवार्ड से सम्मानित गया है। इस फिल्म में शशांक शेण्डे एक किसान पिता की तथा साहिल जोशी पुत्र की भूमिका में है। की उम्र 5-6 साल की थी जब उसकी माँ की मृत्यु हो जाती है। जिसके बाद किसान पिता ही अ साहिल का पालन-पोषण करता है। शशांक शेण्डे का सबकुछ साहूकार के पास गिरवी है तथा स उसपर अपना कब्जा करना चाहता है लेकिन शशांक अपने खेत को बचाने के लिए रात-दिन मेहनत है और साथ ही अपने पुत्र को माँ-पिता दोनों का प्यार देता है। साहिल को बचपन में ही बता दिया कि उसकी माँ ईश्वर के यहाँ चली गई है, अतः वह अपनी माँ की खोज करते हुए पंढरपुर नामक गांव है। शशांक एक बेहद ही गरीब किसान एवं पिता की भूमिका का निर्वाह करते हुए कई बार हताश होकर आत्महत्या जैसा विचार उसके मन में आता है। प्रस्तुत फिल्म सिर्फ शशांक की कहानी ही नहीं पूरे महाराष्ट्र के किसानों की कहानी बयां करती है। 'रिंगण' (सर्कल) फिल्म में दो रिंगण है एक शश जीवन का दूसरा उसके पुत्र का है। इसमें किसान शशांक आत्महत्या करने का भले ही विचार व लेकिन आत्महत्या नहीं करता है बल्कि शशांक रिंगण से अपने जीवन की समस्या को सूलझाने का मार्ग निकालता है। याने पंढरपुर की वारी करने के बाद उसके अंदर एक तरह से आत्मविश्वास नई लेकर आता है।" ('वारी' से आशय हर साल नियमित रुप से किसी देवता के दर्शन के लिए जानेवाली है) शशांक अपने जीवन में आनेवाली कठिन से कठिन समस्या का योग्य मार्ग से निर्वाह करता है। 'रिंगण' फिल्म में महाराष्ट्र के 'श्री क्षेत्र पंढरपुर के विठ्ठल' के आस-पास का पूरा चित्रण दिखाया गया वह 'पंढरपुर क्षेत्र' एक पात्र के रुप में हमारे समक्ष आता है। पंढरपुर में हर साल लाखों की संख्या दर्शन के लिए आते हैं। लोगों को लगता है ईश्वर कोई चमत्कार करेंगा और हमारे जीवन में उससे स हो जायेगा, ऐसी हमारी आस्था रहती है परंतु ऐसा कदापि नहीं होता है। मनुष्य के अंदर की मान जगते ही ईश्वर का आभास होता है। इससे पहले की फिल्मों में माँ के किरदार को अधिक महत्त्व दिय रहा था मगर 'रिंगण' फिल्म में संभवतः पहली बार एक किसान पिता के दो संघर्ष को समग्रता दिखाया गया है। इस रूप में 'रिंगण' मराठी दर्शकों को एक नए-विचार की और प्रवृत्त करती है।

'मी येतोय' फिल्म का निर्देशक 'नीतिश अस्वार' ने इसी साल 2018 में किया है। जिसक भूमिका में घनश्याम दरोड़े ने किसान के पुत्र का अभिनय किया है और यह पूरी फिल्म उनके जी आधारित है। जब कभी हम किसी व्यक्ति का भाषण सुनते हैं तो हमें लगता है कि वह आगे चलक बड़ा वक्ता या नेता बनेगा। यह सम्भावना घनश्याम दरोड़े में भी देखने को मिलती है, जिसकी उम्र 1 की है और जो सामान्य घर का लड़का होकर भी भाषण करने में किसी नेता से कम नहीं है। दरोड़े कला उसे अपने समाज में एक विशिष्ठ पहचान दिलाती है। दरोड़े को उसके समाज में सभी 'छोटा अथवा 'छोटा नेता' के रुप में जानते हैं। घनश्याम दरोड़े को किसान जीवन के प्रति गहरी सहानुभूति उसका सपना ही किसानों के जीवन को सुखी देखना है। एक लम्बे अरसे से किसान सरकार से लाइटबिल माफ करने की मांग कर रहे हैं परन्तु इस विषय को

Scanned by TapScanner

सभी नेता बोलते हैं कि हमे किसानों की समस्या का एहसास है मगर वह धान कैसे उगाता है और ब
उस धान को क्या भाव मिलता है? उसे स्वयं अपने उगाए हुए अन्न का मूल्य निर्धारित करने का अधिक
है। जबकि एक दुकानदार अपने वस्तु का मूल्य स्वयं निर्धारित करता है। ग्रामीण क्षेत्र के किसानों का
अत्यंत दुख भरा है। उन्हें धान के सिंचाई के लिए मात्र 4-5 घंटे ही बिजली मिल पाती है। सत्ता का किर
प्रति दोहरा चरित्र भी यहाँ स्पष्ट देखने को मिलता हैं। जहाँ सरकार बड़े-बड़े उद्योगपतियों को भरपूर
उपलब्ध करवाती है लेकिन किसानों को मात्र कभी रात में तो कभी दिन में 4-5 घंटे ही देती है। उ
बारिश व ठंड में खेतों में अनवरत काम करना पड़ता है। इस बीच खेतों में काम करते हुए अगर वे
पड़ जाते हैं तो उनके पास दवाई के लिए पर्याप्त पैसे भी नहीं होते। ऐसी स्थिति में उनका जीवन कित
भरा है और उसके बाल-बच्चे कैसे स्कूल जाते होगे? किसान के कितने बच्चों को रोजगार मिला? ऐसे
प्रश्न हमारे सामने उठते हैं, जिसका जीवंत चित्रण फिल्म में देखने को मिलता है। एक किसान जी
साहूकार के कर्ज तले दबा रहता है, उस पर मौसम से मार तथा सरकार का उदासीन रवैया उसे आ
करने पर मजबूर करता है। किसानों की इसी बदत्तर हालत के कारण देश में किसान आत्महत्या की
निरंतर बढ़ रही हो जो एक विचारणीय प्रश्न है! किसान जीवन के समग्र संघर्ष को केंद्र में रखकर 'मी
फिल्म के निर्देशक ने किसान जीवन के यथार्थ से दर्शकों को अवगत कराया है। अन्न उगाने वाल
अन्नदाता ही भूखा रहता है, इसका मार्मिक तथा जिवंत चित्रण फिल्म में स्पष्ट देखने को मिलता है।
जीवन को लेकर यह फिल्म अपने आप में अनूठी बन पड़ी है।

महानगरों में भाषा की हीनताबोध को लेकर आनंद द्वारा निर्देशित 'गावठी' फिल्म 7 जून 20
दर्शकों के बीच प्रदर्शित हुई। इसमें प्रमुख भूमिका में श्रीकांत पाटिल, योगिता चव्हाण, संदीप गाय
गौरव मोरे आदि मराठी अभिनेता हैं। गावठी (हिंदी अर्थ गँवार) नामक फिल्म अपने गाँव, भाषा,
वातावरण के प्रति हीन भावना एवं अपमान के स्थान पर सम्मान का भाव दिखाया है और इस दिशा में
को सोचने पर विवश किया है। अक्सर हम पढ़-लिख कर अपने माता-पिता की कम शिक्षा का, उनके
सहन तथा उनके समाज से अपने आप को अलग करके उसका मूल्यांकन करने लगते हैं। ऐसी रि
तथाकथित विद्वान लोग अपनी मातृभाषा, गाँव व अपने मिट्टी के प्रति असम्मान का भाव रखने ल
'गावठी' ऐसे लोगों की मानसिकता पर सटीक चोट करती है। कई मायनों में यह फिल्म सांकृतिक व
महत्त्व को स्पष्ट करने के साथ लोगों को जागरूक करती है। मुंबई जैसे महानगरों में अँग्रेजी न
कारण लड़कों को 'गँवार' कहकर अपमानित किया जाता है। उन्हें नौकरी नहीं मिलती है मगर फि
नायक 'गँवार' शब्द को कम न आंकते हुए उसके प्रति अभिमान का भाव रखता है क्योंकि वही नाय
अस्मिता है। कभी भी अपनी मातृभाषा में बोलते समय कौन क्या कह सकता है! इसका भान न रर
अपनी भाषा के प्रति स्वयं को गर्व, सम्मान, आदर का भाव होना चाहिए. यह 'गावठी' फिल्म ने सम
खुला संदेह है।

Scanned by TapScanner

राजनीति व शासन-व्यवस्था के रक्षक ही जनता के भक्षक बन रहे हैं। अपनी काम वासना को नि रखने की वजह से वह समाज के लिए हितकारी साबित नहीं हो पाते हैं, यह दृश्य फिल्म के जरिये दि ऐसी परिस्थिति स्वतंत्रता के पहले भी थी और आज भी हैं , सिर्फ स्वरुप बदला है। अपने यहां कानून- में सबको एकसाथ ही देखने की आवश्यकता है। जिससे बहुत-सी समस्याओं का हल निकल सकता

संदर्भ ग्रंथ

1. बालक-पालक (4 जन 2013) निर्देशक रवि जाधव
2. टाइम पास (21 दिसं 2013) दिगदर्शक रवि जाधव
3. ख्वाड़ा (2015) दिगदर्शक शशांक शेण्डे
4. किल्ला फिल्म (2015) दिगदर्शक अविनाश अरुण
5. सैराट (10 अप्रैल 2016) दिगदर्शक श्री नागराज मंजुले
6. 35 टक्के वर पास फिल्म (20 मई 2016) सतीश मोटलिंग
7. वही,
8. वही,
9. रिंगण (2 जून 2017) दिगदर्शक मकरंद माने
10. मी येतोय फिल्म (1 जनवरी 2018) नीतिश अस्वार
11. गावठी फिल्म (7 जून 2018) दिगदर्शक आनंद
16. अभिनेता अक्षय कुमार की फिल्म चुंबक (27जुलाई 2018)

Scanned by TapScanner